''पुनरुत्थान मैं हूं''
(11:1-44)

पता नहीं यिर्मयाह कैसे प्रचार कर पाया था! पर पुराने नियम के इस भविष्यवक्ता ने लगभग जितनी बार भी प्रचार किया, उतनी ही बार उसकी मण्डली छोटी होती गई। उस समय के कारण जिसमें वह रहता था, वह सच्चाई जिसका प्रचार करने के लिए उसे बुलाया गया था, लगभग पूरी की पूरी बुरी खबर ही थी। इस्राएल में बुराई बहुत बढ़ चुकी थी और परमेश्वर ने उन्हें बाबुल में दासत्व में भेजने का निर्णय ले लिया था। इस्राएल के लिए यिर्मयाह का संदेश ''अपनी दवाई लेकर'' शांति से न्याय को मान लेना था। इसलिए लोग उससे घृणा करते थे और चाहते थे कि काश वह मर जाए!

बुरी खबर

यूहन्ना 11 अध्याय से आरम्भ करते हुए यह अध्ययन आज के प्रचारक को लगभग यिर्मयाह जैसा ही अहसास कराता है। इस पैरे में अद्‌भुत ढंग से कुछ अच्छी खबर तो है, परन्तु इसमें एक बात आवश्यक बताई गई है कि हम पहले कुछ ऐसी बात का सामना करें जिसका सामना शायद हम न करना चाहते हों। पीड़ादायक सच्चाई यह है कि *हम सबकी मृत्यु होगी!* यह जीवन नाशवान है। अभी हम चाहे जवान, हट्टे कट्टे और स्वस्थ हों, परन्तु हमें एक दिन अवश्य मरना पड़ेगा! वह दिन आज या कल या अस्सी साल बाद कभी भी आ सकता है, परन्तु यह तय है कि हम मरेंगे ज़रूर।

हम इस भयानक सच्चाई का सामना करने से बचने के लिए कई तरह से बचाव करने की कोशिश करते हैं। हम अपने आपको यह समझाने की कोशिश करते हैं कि यदि हम ज्यादा से ज्यादा व्यायाम करें, उचित भोजन खाएं, गाड़ी में बैठते समय सीट बैल्ट बांधें, शुद्ध पानी पीएं, और बाहर जाते समय धूप की ऐनक लगाएं तो हम मृत्यु से बच सकते हैं। अन्त में हमें इस सच्चाई से कोई नहीं बचा सकता कि इस संसार में मृत्यु दर 100 प्रतिशत है!

शायद आप सोच रहे हैं, ''आज मैं यह नहीं सुनना चाहता! पूरा सप्ताह मैं बहुत ही परेशानी में रहा हूं और अब मुझे याद कराया जा रहा है कि मैं मर जाऊंगा!'' यदि सुसमाचार में इस प्रश्न का उत्तर न दिया गया होता तो मैं ऐसे कष्टदायक, निराश करने वाले विषय पर बात ही न करता। यूहन्ना 11 अध्याय की शानदार कहानी में, यीशु हर युग के लोगों में ऐलान करता है, ''पुनरुत्थान और जीवन मैं हूं।'' यह बहुत अच्छी खबर है, परन्तु हमें

इसके महत्व को जानने के लिए पहले बुरी खबर को याद करना भी आवश्यक है।

यीशु और उसके चेले यरदन नदी पार करके यहूदिया में चले गए जहां यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने प्रचार किया था (10:40)। एक दिन समाचार मिला कि बैतनिय्याह वासी लाज़र बीमार हो गया है (11:1)। लाज़र और उसकी बहनें मरियम और मरथा, यीशु के अच्छे मित्र थे, इसलिए सबको लगा कि यीशु तुरन्त ही बैतनिय्याह में चला जाएगा। परन्तु कुछ कारणों से जिन्हें उस समय केवल यीशु ही जानता था, वह जहां था वहीं पर दो दिन और रुका रहा। अन्त में यह जानकर कि लाज़र मर गया है, यीशु ने अपने चेलों को बताया कि अब जाकर बीमार मित्र को देखना चाहिए। पहले तो उन्होंने इस विचार पर आपत्ति जताई क्योंकि वे जानते थे कि उनके यरूशलेम के निकट दोबारा जाने पर सताव और सम्भवत: मृत्यु उनकी प्रतीक्षा कर रही होगी और बैतनिय्याह वहां से केवल दो मील दूर था (11:18)। परन्तु जब यीशु ने उन्हें बताया कि लाज़र मर गया है, तो वे न चाहते हुए भी जाने के लिए सहमत हो गए, क्योंकि थोमा ने कहा ''मरने को चलें'' (11:16)।

यीशु के गांव के निकट पहुंचने पर, परन्तु प्रवेश करने से पहले ही (11:30), जब मरथा ने सुना कि वह आ रहा है तो वह उससे मिलने के लिए भागकर गई। वह कहने लगी, ''हे प्रभु, यदि तू यहां होता, तो मेरा भाई कदापि न मरता'' (11:21)। पूरी मानव जाति मृत्यु के सामने असहाय होने की मरथा की भावनाओं से अपने आपको जोड़ सकती है। किसी का जनाज़ा हमें यह याद दिलाने का एक माध्यम है कि हमारे भरसक प्रयास भी हमें मृत्यु के क्रूर पंजे से नहीं छुड़ा सकते।

यीशु ने मरथा को उत्तर दिया, ''तेरा भाई जी उठेगा'' (11:23)। यह जानने का हमारे पास कोई साधन नहीं है कि उसने इस वाक्य को कैसे समझा। क्या उसके लिए यह वाक्य पीड़ादायक था? क्या उसे ये शब्द किसी जनाज़े वाले घर में सुनाई देने वाले बहुत से झूठे आश्वासनों की तरह लगे। क्या उसे ये शब्द विश्वास की कमी के लिए डांटने वाले लगे? यीशु के शब्दों पर उसकी पहली प्रतिक्रिया जो भी रही हो, परन्तु मरथा ने उन्हें आत्मिक रूप देकर उत्तर दिया, ''मैं जानती हूं, कि अन्तिम दिन पुनरुत्थान के समय वह जी उठेगा'' (11:24)।

अच्छी खबर

यहां यीशु ने अपनी पूरी सेवकाई के सबसे अधिक संसार को बदलने वाले कुछ शब्द कहे। उसने मरथा से कहा, ''पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूं; जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाए, तौभी जीएगा। और जो कोई जीवित है, और मुझ पर विश्वास करता है, वह अनन्तकाल तक न मरेगा'' (11:25, 26क)। यहां इस बात पर ध्यान देना आवश्यक है कि यीशु ने क्या *नहीं* कहा। उसने यह नहीं कहा कि ''मैं लाज़र को पुन: जीवित कर दूंगा।'' उसने यह नहीं कहा कि ''मैं फिर से जी उठूंगा।'' उसने यह कहते हुए कि ''पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूं'' इन विचारों से कहीं अधिक व्यक्त कर दिया। यहां हमें यूहन्ना रचित सुसमाचार में ''मैं हूं'' वाक्य मिलता है। यीशु अपनी ईश्वरीयता का एक

और दावा कर रहा था, साथ ही उस बड़े शत्रु अर्थात मृत्यु से अपने सम्बन्ध की परिभाषा दे रहा था।

अपने आपको पुनरुत्थान होने का दावा करके, यीशु न तो यह प्रतिज्ञा कर रहा था कि उसके अनुयायियों को कभी शारीरिक मृत्यु का सामना नहीं करना पड़ेगा और न ही यह कह रहा था कि वह कभी भी शारीरिक रूप से नहीं मरेगा। इसके बजाय, वह दावा कर रहा था कि वह मरकर मृत्यु के बंधन को तोड़ता हुआ फिर से जी उठेगा। इसलिए उसके अनुयायियों को मृत्यु से ऐसा सम्बन्ध बनाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। उनके लिए पुनरुत्थान एक आश्चर्यकर्म अर्थात एक बार होने वाली घटना से कहीं बढ़कर होगा अर्थात जीवन के बारे में यह एक नई वास्तविकता होनी थी!

मरथा के अगले शब्द बहुत बड़े विश्वास और आत्मिक बातों में उसकी गहन समझ दिखाते हैं। जब यीशु ने उससे पूछा कि क्या वह उस पर विश्वास करती है, तो उसने उत्तर दिया, ''हां हे प्रभु, मैं विश्वास कर चुकी हूं, कि परमेश्वर का पुत्र मसीह जो जगत में आनेवाला था, वह तू ही है'' (11:27)। उस अद्‌भुत आश्चर्यकर्म को देखने से पहले ही मरथा ने वह विश्वास दिखा दिया जिसके करने के लिए यूहन्ना ने सुसमाचार की पुस्तक लिखी![1]

यीशु से मिलने के बाद, मरथा अपनी बहन को यीशु के आने की खबर देने के लिए अपने घर चली गई। यह सुनकर कि यीशु कहीं पास ही है, मरियम उससे मिलने के लिए भाग गई। उसने यीशु से मिलकर उसके पांवों पर गिरकर अपनी बहन के पीड़ादायक शब्द दोहराए: ''हे प्रभु, यदि तू यहां होता तो मेरा भाई न मरता'' (11:32)। हम सब ने मरियम जैसी पीड़ा, दुख, क्लेश और परेशानियां सही होंगी। उसके कारण, हम सभी यीशु के साथ लाज़र की कब्र पर जाने को तैयार हैं।

उस सबके कारण जो यीशु ने उस दिन देखा था, वह ''आत्मा में बहुत ही उदास हुआ, और घबरा'' गया था (11:33)। उसने पूछा कि उन्होंने लाज़र को कहां गाड़ा है। जब वे कब्र की ओर जा रहे थे, तो यीशु भी शोक करने वालों के साथ रोने लगा और उसके आंसू भी बहने लग पड़े थे (11:35)। देखने वालों ने हैरान होकर कहा था, ''देखो, वह उस से कैसी प्रीति रखता था'' (11:36)।

वास्तव में लाज़र की कब्र एक गुफ़ा थी जिसके द्वार पर एक बड़ा पत्थर रखा गया था (11:38)। जब यीशु ने उन्हें पत्थर हटाने के लिए कहा, तो मरथा ने रोकर कहा था कि लाज़र को मरे हुए तो चार दिन हो गए हैं और अब तो उसकी लाश से दुर्गन्ध भी आने लगी होगी। यीशु ने उसे भरोसा रखने के लिए कहा और पत्थर को हटवा दिया (11:39-41)।

यूहन्ना रचित सुसमाचार में दर्ज सभी ''चिह्नों'' में, लाज़र की कब्र पर होने वाले चिह्न से बड़ा कोई चिह्न नहीं था। अध्याय 11 में तीन बार यीशु ने कहा कि ये बातें इसलिए हुईं ताकि लोग ''परमेश्वर की महिमा'' को देख पाएं (11:4,15, 40)। बेशक हर कदम पर हमने यीशु की शिक्षाओं और उसके आश्चर्यकर्मों में परमेश्वर की महिमा को देखा है; परन्तु अब तक यूहन्ना रचित सुसमाचार में, लाज़र का जिलाया जाना, अर्थात परमेश्वर की

महिमा तथा मसीह में परमेश्वर का होना सबसे अधिक आकर्षित करने वाला है। यह तो ऐसा है जैसे हम सुसमाचार की इस पुस्तक को ऐसे बल्ब की रोशनी में पढ़ रहे हों जिसके स्विच से उसकी रोशनी तेज या कम हो सकती है। हम यूहन्ना की पुस्तक को पढ़ते हुए जैसे-जैसे आगे बढ़ते हैं, वैसे-वैसे उसकी रोशनी और तेज होती जाती है। जब हम अध्याय 11 में पहुंचते हैं, तो रोशनी लगभग चुंधियाने वाली हो जाती है। हमने पहले भी कई तरह से परमेश्वर की महिमा को देखा है, परन्तु अगली कुछ आयतों में हम इसे सबसे अधिक शक्तिशाली रूप में देखते हैं।

शोक करने वाले स्तब्ध लोगों ने लाज़र की कब्र के बाहर प्रवेशद्वार से उस पत्थर के हटाए जाने को देखने के अलावा यीशु को अपनी आंखें आकाश की ओर उठाकर प्रार्थना करते देखा (11:41, 42)। अपनी प्रार्थना समाप्त करने के बाद, यीशु ने ज़ोर से पुकारा, ''हे लाज़र, निकल आ'' (11:43)। कब्र के द्वार की ओर देखकर हर किसी की आंखें पथरा गई होंगी। यदि कोई हलचल नहीं हुई होती, तो उन्हें पता होना था कि वे एक पागल आदमी के पास खड़े हैं; परन्तु यदि लाज़र कब्र से बाहर आ जाता तो उन्हें समझ आ जाना था कि वे किसी ऐसे व्यक्ति के सामने खड़े हैं जिसके पास इतनी शक्ति थी जितनी उन्होंने कभी किसी में नहीं देखी थी।

लाज़र, ''जो मर गया था'' (11:44), कब्र से बाहर आया, अभी भी उसकी देह कफ़न में लिपटी हुई थी। यीशु ने पास खड़े लोगों को आज्ञा दी, ''उसे खोलकर जाने दो''(11:44)। लाज़र ज़िंदा हो गया था, यीशु ने फिर दिखा दिया था कि उसका दावा सच्चा है, और परमेश्वर की महिमा और शानदार ढंग से हुई! हमारी उम्मीद के अनुसार इसका परिणाम यह हुआ कि इन घटनाओं को देखने वाले बहुत से लोगों ने उस दिन यीशु में विश्वास किया (11:45)।

अच्छी खबर और हम

लाज़र की कब्र पर यीशु की कहानी हमें मृत्यु के भय का सामना करने में सहायता करती है। जो कुछ यीशु ने उस समय किया और आज तक करता आया है, उससे हमें इस जीवन में प्रसन्न होने के लिए मृत्यु की वास्तविकता का इन्कार करने की आवश्यकता नहीं है। मसीही होने के कारण, हम मृत्यु से भागते नहीं, बल्कि इसका सामना करते हैं। हम यह बहाना नहीं बनाते कि हम पर मृत्यु नहीं आएगी बल्कि हम संसार में यह ऐलान करते हैं कि हमें इसका उत्तर मिल गया है। यह नया व्यवहार पौलुस के लेखों से निम्न दो उदाहरणों में मिलता है:

> क्योंकि मैं निश्चय जानता हूं, कि न *मृत्यु,* न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानताएं, न वर्तमान, न भविष्य, न सामर्थ, न ऊंचाई, न गहराई और न कोई और सृष्टि, हमें परमेश्वर के प्रेम से, जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है, अलग कर सकेगी (रोमियों 8:38, 39)।

> और जब यह नाशमान अविनाश को पहिन लेगा, और यह मरनहार अमरता को पहिन लेगा, तब वह वचन जो लिखा है, पूरा हो जाएगा, कि जय ने *मृत्यु को निगल लिया। हे मृत्यु तेरी जय कहां रही?* (1 कुरिन्थियों 15:54, 55)

मृत्यु, जीवन की वास्तविकता है। इसलिए हम परमेश्वर का धन्यवाद कर सकते हैं कि मसीहियत में मृत्यु का उत्तर है। यह ज्ञान कि यीशु पुनरुत्थान और जीवन है, हमें ''वास्तविक संसार'' में शांति और आनन्द पाने के योग्य बनाता है। मृत्यु के भय का सामना करने के बावजूद हम इस जीवन में सच्चा आनन्द पा सकते हैं।

सत्रहवीं शताब्दी के कवि और प्रचारक, जॉन डॉन्न ने जीवन और मृत्यु के अहम मुद्दों पर अपने मन और आत्मा को अनुशासित करने के लिए कफ़न में सोने के लिए एक समय चुना था। कुछ वर्ष पूर्व मैंने भी कुछ ऐसा ही अनुभव किया। दफ्तर के आस पास लगातार शोर और लोगों की आवाजाही के कारण अध्ययन और प्रार्थना के लिए पर्याप्त समय न मिलने के कारण, मैंने अपनी समस्या एक अच्छे मित्र को बताई, जो स्थानीय कब्रिस्तान का मालिक है। थोड़ी देर बाद उसने मुझे बताया कि उसने मेरी समस्या का हल निकाल लिया है। आप मेरे आश्चर्य की कल्पना कर सकते हैं जब वह मुझे कब्रिस्तान की दूसरी मंजिल पर ले गया और मुझे वह स्थान दिखाने लगा जहां उसने मेरे अध्ययन के लिए एक छोटा सा स्थान बनाया था जो शव पेटिकाओं (कफ़नों) के गोदाम के पीछे एक कोने में था! यह मेरे लिए अब तक मिलने वाले सबसे अद्‌भुत उपहारों में से एक था और नगर में यह एक ऐसा स्थान बन गया, जहां मैं सबसे अलग जाकर अध्ययन, मनन और प्रार्थना में समय बिता सकता था (क्योंकि कोई मुझे कफ़नों के गोदाम में आकर परेशान करने वाला नहीं!) तब से मैं अक्सर हैरान होता हूं कि शायद सभी उपदेश किसी कब्रिस्तान में अर्थात जीवन की सबसे कठिन वास्तविकता के साये में लिखे जाने चाहिए। शवों पर लगे सुगंधित इतरों और कफनों से भरे कमरे में से गुजरते हुए मुझे याद आता था कि मेरा उद्देश्य लोगों को सुखद जीवन बिताने के लिए अगुआई देना नहीं बल्कि वास्तविक जीवन ढूंढ़ने में उसकी सहायता करना है। मेरा काम उनके मनों से हर प्रकार के शोक को निकालना नहीं बल्कि उन्हें पुनरुत्थान के मार्ग में आने वाले शोक को दिखाना है। यह केवल उन्हें संसार के दबावों और चिंताओं का सामना करने में सहायता करना ही नहीं बल्कि परमेश्वर से मिलने के लिए तैयार करना है (आमोस 4:12)।

सारांश

क्या आपने कभी कोई सस्पैंस से भरी किताब पढ़ी है या सस्पैंस भरी कोई फिल्म देखी है जिससे डरकर आप कांप गए हों? क्या आपने वही किताब दोबारा पढ़ी या वही फिल्म दोबारा देखी है? दूसरी बार आपकी प्रतिक्रिया क्या थी? जब मैं ऐसा करता हूं, तो मैं दूसरी बार निश्चिंत हो सकता हूं और नायक की समस्याओं को और उसके सामने आने वाले खतरों को अलग ढंग से अर्थात आश्वस्त होकर देख सकता हूं कि अन्त में सब ठीक हो जाएगा।

बैतनिय्याह के निकट लाज़र ने कब्र से बाहर आकर, दिखा दिया कि हमारी अपनी कहानियों का अन्त क्या होगा। यह सही है कि जब तक प्रभु शीघ्र नहीं लौटता, तब तक हम सबको मृत्यु का सामना करना ही पड़ेगा। परन्तु पुनरुत्थान और जीवन यीशु ही है, इसलिए हम मृत्यु को अलग ढंग से देखते हैं। यद्यपि हमारी देहें एक दिन कब्र में रख दी जाएंगी, परन्तु हम जानते हैं कि एक दिन हम उन कब्रों में से जी उठेंगे! विडम्बना यह है कि वास्तव में जीने की हमारी तैयारी तभी शुरू होती है जब हम यह विश्वास करते हैं कि यीशु मृत्यु की समस्या का उत्तर है!

पाद टिप्पणी

[1]मरथा के अंगीकार के लिए साइड नोट के रूप में, लियोन मॉरिस (*द न्यू इन्टरनेशनल कमैन्ट्री ऑन द न्यू टैस्टामेन्ट* [ग्रैंड रैपिड्स, मिशी.: बेकर बुक हाउस, 1986], 551) ने ध्यान दिया कि यह कितने दुख की बात है कि मरथा को लोग इतने अच्छे अंगीकार के बावजूद व्यस्त होने के लिए अधिक जानते हैं (लूका 10:41)।